कृषि / कृषि के संबदध क्षेत्रो में सफलता की कहानी

कहानी का विषय - मत्स्य पालन

1. किसान का नाम- सुशील कुमार राय
2. पिता / पति का नाम - स्व० कामता प्रसाद राय
3. पूरा पता -
    - ग्राम/ मुहल्ला- डिलिया
    - पंचायत - डिहरी
    - पोस्ट- डिहरी
    - थाना- डिहरी
    - प्रखंड- डिहरी
    - जिला- रोहतास
4. किसान का दूरभाष/ मोबाइल स० - 9934934890
5. किसान के पास खेती योग्य भूमि (एकड़ में) - 0.94 एकड़
6. सिंचित क्षेत्र (एकड़ में)- 0.94 एकड़
7. असिंचित क्षेत्र (एकड़ में)- 0 एकड़
8. किसान का प्रकार- सीमांत किसान
9. सफलता की कहानी के पूर्व का संक्षिप्त विवरण :-

    श्री सुशील कुमार राय का जन्म सन 1974 में हुआ | 15 बर्ष की आयु से ही अपने पिता के साथ खाधानिक फसल की खेती में बढ-चढ़ कर हाथ बटाते थे| माध्मिक परीक्षा पास करने के बाद नजदीक के कॉलेज से इंटरमीडियट की पढाई पूरी की| साथ ही D.C.A. (Diploma in Computer Application) की पढाई भी पूरी की | D.C.A. की पढाई पूरी होने के बाद इनकी शादी नजदीक के ही गाँव में हुई | शादी के बाद एक पुत्र और एक पुत्री का जन्म इनके परिवार में हुआ, जिसके कारण काफी दबाब में रहने लगे | संयुक्त परिवार में रहने के कारण खर्च का बोझ बढने लगा|

    श्री सुशील कुमार राय अपने पिता कामता प्रसाद राय के सहयोग से खाधानिक फसल की खेती के अलावा मत्स्य पालन करने का विचार उनके मन में आया परन्तु प्रशिक्षण का अभाव था|

10. सफलता की कहानी :

    श्री सुशील कुमार राय का सम्पर्क प्रखंड डिहरी के आत्मा कर्मी एवं कृषि कर्मी से हुआ तथा अपनी आप बीती बात बताई| मत्स्य पालन करने की जिज्ञासा जाहिर की एवं मत्स्य पालन पर बिस्तृत चर्चा भी हुआ | स-समय कृषि प्रोधोगिकी प्रबन्ध अभिकरण, आत्मा, रोहतास (सासाराम) के सहयोग से मत्स्य विभाग द्वारा प्रायोजित काकीनाड़ा, आंध्रप्रदेश में स्थित प्रशिक्षण केंद्र पर प्रशिक्षण में भेजा गया, ताकि मत्स्य पालन में कोई कठिनाई का सामना न करना पड़े |

जब श्री सुशील कुमार राय प्रशिक्षण प्राप्त कर के घर लौटे तो विभाग के मदद से मत्स्य पालन करना प्रारंभ कर दिये | कुछ समय बाद उनकी स्थिति में लगातार सुधार आने लगा| विभागीय कर्मी द्वारा स-समय देख-रेख किया जाता रहा, उनके चेहरे पर संतोष का भाव दिखने लगा | मात्र 30 कट्ठा (0.94 एकड़) जमीन पर मत्स्य पालन करके अपने जीवन को विकास की उजली किरण दी | अपने आस- पास के किसानो को खेती से हतोत्साहित लोगो को सोचने पर मजबूर कर दिया कि अगर खेती के अलावा सम्बंधित विषयों में तन-मन -धन से मेहनत करे एवं नयी तकनीक का उपयोग करे तो सचमुच में हम अच्छी आमदनी कर सकते है |

आज के समय में श्री राय द्वारा कतला, रेहू, सिल्वर कार्प, ग्रास कार्प, कॉमन कार्प, ब्लैक कार्प, रुपचंदा, पैगेशियस इत्यादी का अच्छी बीज की आपूर्ति मत्स्य विभाग को की जाती है| अपने आस-पास के किसानो को भी प्रशिक्षण देने का कार्य करते है | ये अपने क्षेत्रो में प्रेरणा के स्त्रोत बने हुए है| अब इनके चेहरे पर हमेशा मुस्कान बनी रहती है |

10.1. किये गये कार्य का रंगीन फोटो किसान /समूह के साथ :-

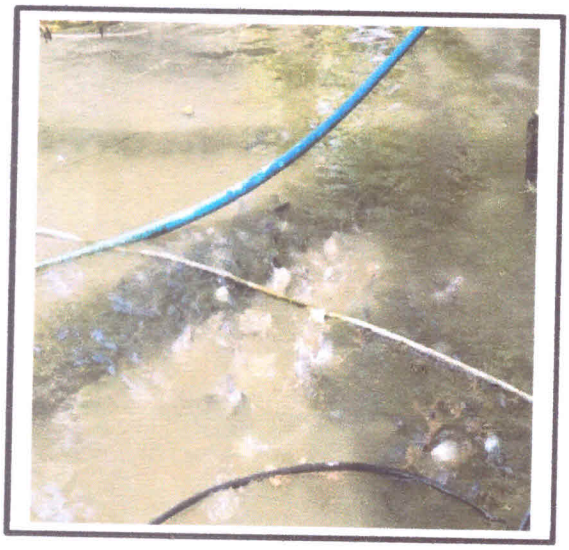

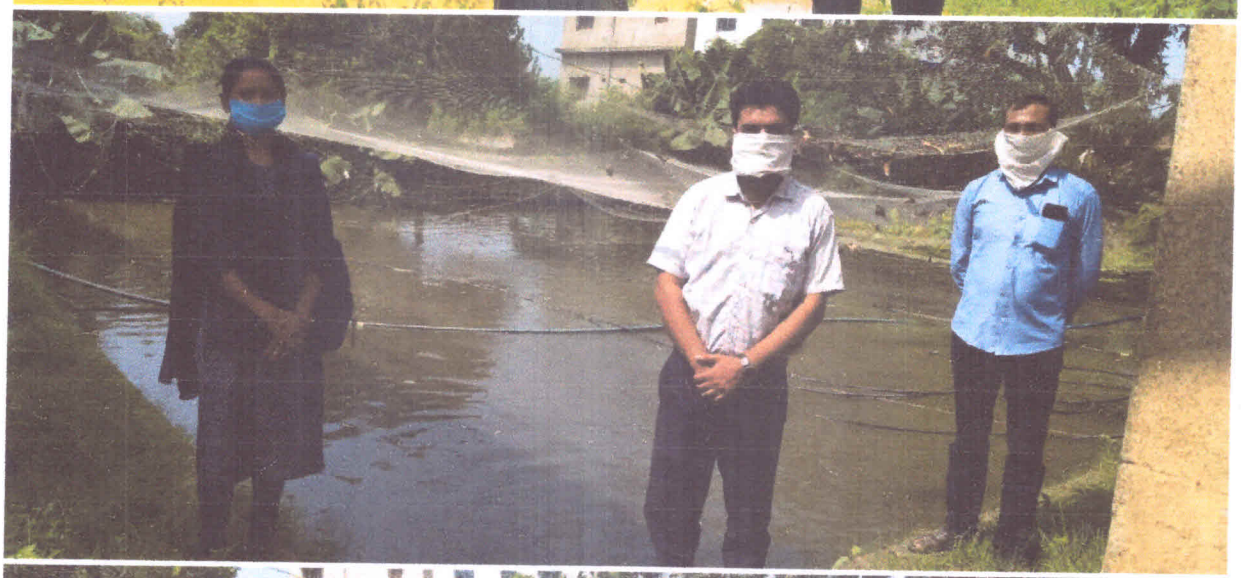

11.सफलता के लिए महत्वपूर्ण तत्व /घटक -

i. कृषि प्रोधोगिकी प्रबन्ध अभिकरण, आत्मा, रोहतास

ii. कृषि विज्ञान केन्द, बिक्रमगंज (रोहतास)

iii. काकीनाड़ा, आंध्रप्रदेश में स्थित प्रशिक्षण केंद्र

iv. कृषि एवं मत्स्य विभाग

12. स्थानीय स्तर पर किसानो के बीच सफलता की कहानी का प्रभाव -

ये अपने क्षेत्रो में प्रेरणा के स्त्रोत बने हुए है, और इससे देख कर अन्य किसान भी प्रभावित है |

13. सफलता की कहानी के लिए प्राप्त पुरस्कार/ प्रशिस्ति पत्र -प्रक्रिया में है |

14 .क्षेत्रवार लागत मूल्य, प्राप्त आमदनी एवं शुद्ध आय का विवरण (रु ० में)-

क्र० स०	विवरण	अपनाने के पूर्व का विवरण		अपनाने के बाद का विवरण	
		प्रक्षेत्र 1		प्रक्षेत्र 2	
1	2	3	4	5	6
1	फसल / क्षेत्र / कार्य का नाम	धान	गेहूं	मत्स्य	
2	कुल भूमि (एकड़)	0.94	0.94	0.94	
3	फसल मौसम में फसल/उत्पाद की मात्रा (क्वी में)	22.5	14	45	
4	उत्पाद की विक्री दर (रु० में प्रति क्वी)	1800	1925	16000	
5	फसल मौसम में/ मत्स्य पालन की कुल लागत मूल्य (चारा/ दाना)	6500	4800	252000	
6	उत्पादन का मूल्य (कीटनाशी/ सिचाई/ खाद/ फिंगरलिंग/ चुना/ probiotics)	1500	1600	87000	
7	मजदूरी खर्च (रु० में)	1500	1500	65000	
8	अन्य लागत खर्च (रु० में) घर का बचत दाबा	1000	1000	8000	
9	कुल लागत खर्च (रु० में)	10500	8900	412000	
10	शुद्ध मुनाफा	30000	18050	308000	

प्रमाणित किया जाता है की उपयुक्त विवरण मेरी जानकारी में सही है | भविष्य में कोई भी सुचना गलत पाये जाने पर मुझे सरकारी अनुदान / लाभ से वंचित किया जा सकता है तथा इसके लिए मै पूर्ण रूप से जिम्मेवार रहूगा |

सुशील कुमार राय

किसान का हस्ताक्षर

R Kumar 08/01/2021

प्रतिहस्ताक्षर
प्रखंड तकनीकी प्रबंधक/
सहायक तकनीकी प्रबंधक
डिहरी, रोहतास

परियोजन निदेशक
आत्मा , रोहतास

कृषि / कृषि के संबदध क्षेत्रो में सफलता की कहानी

कहानी का विषय - मेंथा की खेती से दूगनी की आमदनी

1. किसान का नाम- संजय कुमार
2. पिता / पति का नाम - स्व० सूरज प्रसाद सिंह
3. पूरा पता -
    - ग्राम/ मुहल्ला- अयारकोठा
    - पोस्ट- दरिहट
    - थाना- दरिहट
    - प्रखंड- डिहरी
    - जिला- रोहतास
4. किसान का दूरभाष/ मोबाइल स० - 8804122596
5. किसान के पास खेती योग्य भूमि (हे ० में) - 1 हे ०
6. सिंचित क्षेत्र (हे ० में)- 1 हे ०
7. असिंचित क्षेत्र (हे ० में)- 0 हे ०
8. किसान का प्रकार-
    - सूरज कृषक स्वयं सहायता समूह के अध्यक्ष
    - समूह/संगठन का नाम -सूरज कृषक स्वयं सहायता समूह , आयारकोठा
    - निबधन करने वाली संस्था का नाम- कृषि प्रोधोगिकी प्रबन्ध अभिकरण, आत्मा, रोहतास |
    - निबधन संख्या एवं तिथि- 8601/ 22.08.2019

9. सफलता की कहानी के पूर्व का संक्षिप्त विवरण :-

डिहरी प्रखंड के अयारकोठा ग्राम के 6 भाई वाले परिवार में जन्मे किसान संजय कुमार को पारिवारिक बँटवारे के बाद हिस्से में 5 विगहा कृषि की भूमि मिली थी | शुरुआत में परम्परागत तरीके से धान एवं गेहूं की खेती कर के परिवार का भरण पोशन होता था | साथ ही साथ अपनी मेहनत से 2011 में TET की परीक्षा पास कर टीचर बने मगर घर से दूरी के कारण नोकरी छोडनी पड़ी | किसान संजय कुमार अपनी पत्नी, अपने पुत्र (नैतिक कुमार) एवं पुत्री (अनुगृहित कुमारी) के साथ रह

कर अपनी समझ और सूजवुज से खेती में नए प्रयोग करते रहते है | साथ ही साथ आत्मा, रोहतास से जुड़ कर कृषि सम्बंधित राज्य के अन्दर एवं बाहर परिभ्रमण और प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके है |

10. सफलता की कहानी :

किसान संजय कुमार ने 2019 में कृषि विज्ञान केन्द, बिक्रमगंज (रोहतास) से औषधिय एवं सुगंधित पोधो के उत्पादन का प्रशिक्षण प्राप्त किया | जिसके बाद मेंथा की खेती का मन बनाया और आज 1 हेक्टर में मेंथा की खेती कर रहे है| अपने खेती के लिए पैसे की जरुरत की पूर्ति सूरज कृषक स्वयं सहायता समूह के बचत से करते है | किसान संजय कुमार का कहना है की यदि आप के इरादें मजबूत हो तो मंजिल मिल ही जाती है | उनके अनुसार 1 हेक्टर में मेंथा की खेती से लगभग 200 लीटर मेंथोल (MENTHOL) तेल की प्राप्ति होती है और अगर मौसम साथ दे तो उपज बढ़ती है | साथ ही साथ सल्फर (S) जो NPK के बाद चौथा महत्वपूर्ण तत्व है, का उपयोग मेंथा की खेती में करने से मेंथोल (MENTHOL) तेल की मात्रा 15-20 % बढ़ जाती है | हर 3 बर्ष में अपने खेत की मिट्ठी की जाँच करवाते है और उसके अनुसार ही खाद और ओर्गिक फ़र्टिलाइज़र का उपयोग खेतो में करते है ऐसा करने से आतिरिक्त खाद का उपयोग नही होपाता और पैसे की वचत के साथ खेत की उर्वरता बनी रहती है| इन्होने नर्सरी में मेंथा के स्टोलोंस (stolons) से सीडलिंग को तैयार किया फिर मुख्य खेत तैयार करते समय FYM के साथ NPKS फ़र्टिलाइज़र का उपयोग किया है | अगले दिन सीडलिंग को 45-30 × 45-30 cm (वेराइटी के अनुसार) स्पेसिंग में तैयार खेत में लगाया गया | किसान संजय कुमार को उम्मीद है की इस बर्ष भी मेंथा की अच्छी उपज होगी और 200 लीटर से अधिक मेंथोल तेल (MENTHOL) की प्राप्ति होगी | बाज़ार के डिमांड के अनुसार तेल का भाव 1000-1250 रुपया प्रति लिटर रहता है जिससे अच्छी आमदनी होने की उम्मिद है | अब उनकी मुस्कान बनी रहती है और परिवार में खुशिया आरही है | भविष्य की सोच के साथ गाँव के लिए खुद की मिट्ठी जाँच प्रयोगशाला भी खोलना चाहते है ताकि आसपास के किसाने को इसका लाभ मिल सके|

10.1. किये गये कार्य का रंगीन फोटो किसान /समूह के साथ :-

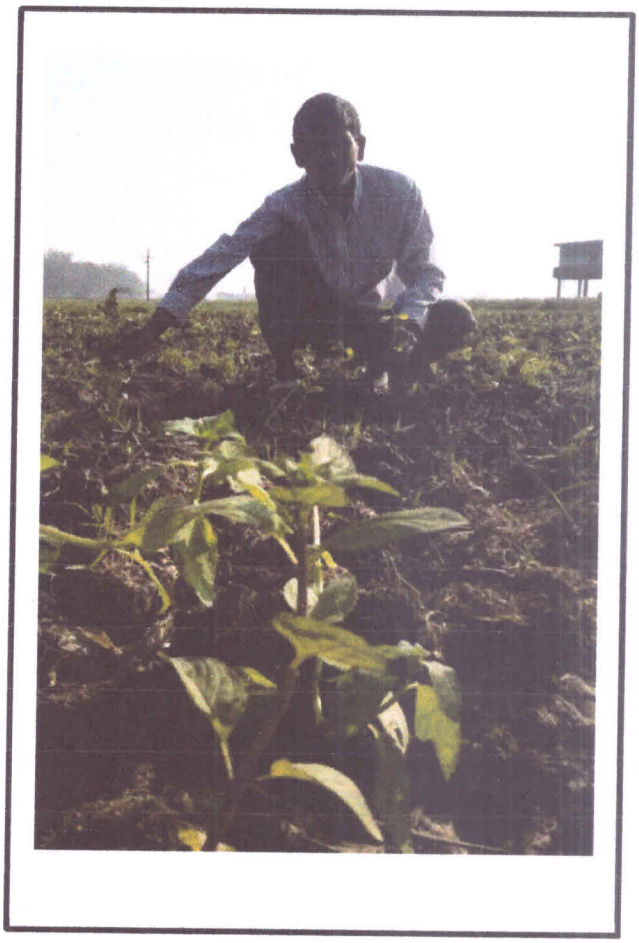

11. सफलता के लिए महत्वपूर्ण तत्व /घटक -

i. कृषि प्रोधोगिकी प्रबन्ध अभिकरण, आत्मा, रोहतास

ii. कृषि विज्ञान केन्द, बिक्रमगंज (रोहतास)

iii. कृषि विभाग के सहयोग से

12. स्थानीय स्तर पर किसानो के बीच सफलता की कहानी का प्रभाव -

किसान संजय कुमार के मेहनत और लगन को देख कर आस-पास के लोग काफी प्रभावित रहते है और उनके प्रयासों की सराहना करते है तथा उनसे खेती से जूरे समस्ये और सुझाव पूछते है | अब वे एक सफल किसान के रूप में पहचाने जाते है|

13. सफलता की कहानी के लिए प्राप्त पुरस्कार/ प्रशिस्ति पत्र -प्रक्रिया में है |

14. क्षेत्रवार लागत मूल्य, प्राप्त आमदनी एवं शुद्ध आय का विवरण (रु ० में)-

क्र ० स ०	विवरण	अपनाने के पूर्व का विवरण		अपनाने के बाद का विवरण	
		प्रक्षेत्र 1		प्रक्षेत्र 2	
1	2	3	4	5	6
1	फसल / पशु/क्षेत्र /कार्य का नाम	धान	गेहूं	धान	मेंथा
2	मौसम में फसल /उत्पादन की मात्रा क्वी में / लीटर में	60	40	60	200
3	उत्पाद की विक्री दर	1400	1800	1400	1000
4	फसल मौसम में कुल लागत मूल्य	17000	12000	17000	15000
5	उत्पादन का मूल्य (बीज, कीट नासी/ सिचाई / कटाई/ तेल निकासी)	5000	4000	5000	28000
6	मजदूरी	3500	3500	3500	15000
7	अन्य लागत घर का बचत दाबा	2500	2500	2500	2500
8	कुल लागत	28000	22000	28000	60500
9	शुद्ध मुनाफा	56000	50000	56000	139500

प्रमाणित किया जाता है की उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी में सही है | भविष्य में कोई भी सुचना गलत पाये जाने पर मुझे सरकारी अनुदान / लाभ से वंचित किया जा सकता है तथा इसके लिए मै पूर्ण रूप से जिम्मेवार रहूगा |

संजय कुमार

किसान का हस्ताक्षर

R Kumar 08/01/2021

प्रतिहस्ताक्षर

प्रखंड तकनीकी प्रबंधक/

सहायक तकनीकी प्रबंधक

डिहरी, रोहतास

परियोजन निदेशक

आत्मा , रोहतास

<u>कृषि / कृषि के संबदध क्षेत्रो में सफलता की कहानी</u>

कहानी का विषय - परंपरागत खेती से अलग सब्जी की खेती

1. किसान का नाम- श्री उजाला कुमार
2. पिता / पति का नाम - श्री जनार्धन सिंह
3. पूरा पता -
    - ग्राम/ मुहल्ला- अर्जुनविगह
    - पंचायत - दरिहट
    - पोस्ट- दरिहट
    - थाना- दरिहट
    - प्रखंड- डिहरी
    - जिला- रोहतास
4. किसान का दूरभाष/ मोबाइल स० - 9801643800
5. किसान के पास खेती योग्य भूमि (हे० में) - 0.75 हे०
6. सिंचित क्षेत्र (हे ० में)- 0.75 हे०
7. असिंचित क्षेत्र (हे ० में)- 0 हे०
8. किसान का प्रकार-
    - महावीर कृषक हित समूह के सदस्य
9. सफलता की कहानी के पूर्व का संक्षिप्त विवरण :-

युवा किसान श्री उजाला कुमार का जन्म डिहरी प्रखंड के अर्जुनविगह गाँव में हुआ | प्रारंभिक शिक्षा दरिहट हाई स्कूल से प्राप्त करने के बाद वीरकुवर सिंह यूनिवर्सिटी से 2013 में समाजशास्त्र से स्नातक किया | रेलवे की नौकरी की चाहत में 2017 में आईटीआई की परीक्षा भी पास किया, कई बार रेलवे की परीक्षा में भाग भी लिए मगर नौकरी नही मिलने के कारण पिता एवं बड़े भाई के साथ खेती के कार्य को अपनाया और अलग सोच रखते हुए परंपरागत खेती न कर के सब्जी की खेती करना प्रारम्भ कर दिया |

10. सफलता की कहानी :

किसान उजाला कुमार ने खेती के कार्य को अपनाया और इसे ही अपना व्यवसाय बनाते हुए परंपरागत खेती न कर के सब्जी की खेती करना प्रारम्भ किया | शुरुआत में कई लोगो ने उनको ऐसा करते देख कई नकारात्मक बाते करते थे, और उनके पढाई का ताना दिया करते थे मगर किसान उजाला कुमार सभी के बातो को नजर अंदाज करते हुए पूरी लगन से सब्जी की खेती में लगे रहे| इस दौरान कृषि प्रोधोगिकी प्रबन्ध अभिकरण, आत्मा, रोहतास द्वारा आयोजित जिला के किसान मेला में भाग लेने का सौभाग्य इसको प्राप्त हुआ जहाँ इन्हें कृषि से जुड़े कई तरह की तकनीकी पुस्तिका प्राप्त हुई| पुस्तिका के आधार पर उन्होंने सब्जी की खेती करना प्रारम्भ किया | पुस्तिका के एक भाग में जैविक खेती और पशु के गोबर से जैविक खाद बनाने

की विधि को पढ़ा और इससे प्रभावित हो कर अपने घर के 6 गाय से उत्पन गोबर से जैविक खाद बनाने का मन बना लिया | प्रखंड कृषि कार्यालय डिहरी के आत्मा कर्मी एवं कृषि कर्मी से जैविक खाद बनाने की बिधि की विस्तृत जानकरी इक्कठा करने के बाद अपनी सुविधा के अनुसार गाय से उत्पन गोबर को घर के पास ही एक गढ़े में जमा करने लगे और पूरी तरह अपघटन होने के बाद इसका प्रयोग जमीन की तैयारी करते समय अपने सब्जी की खेती में करते है| इसके अलावा आवश्कता अनुसार केमिकल खाद, कीटनाशक एवं फफुन्द्नाशक इत्यादि का उपयोग करते है | किसान उजाला कुमार का कहना है की पूरी तरह जैविक खेती अपनाने पर शुरुआत में उत्पादन में कमी आजाती है, इसलिए साल दर साल वे जैविक खाद की मात्रा खेती में बढ़ा रहे है और केमिकल खाद की मात्रा खेती में कम कर रहे है ताकि उत्पादन में कोई असर नही आये और आसानी से समय के साथ खेत पूरी तरह जैविक हो जाये | इसका ये भी कहना है की डिहरी में जैविक सब्जी/ उत्पाद का सही दाम नही मिल पाता है, इसको देखते हुए आत्मा, डिहरी के कर्मी के मदद से महावीर कृषक हित समूह का गठन किया जा रहा है एवं उसमे ऐसे किसान को जोड़ा जा रहा है जो जैविक सब्जी/ उत्पाद करना चाहते है ताकि बड़े स्तर पर उत्पाद के डिहरी से बाहर भेजा जा सके | बाज़ार के अनुसार 2000-2400 प्रति क्वी का दाम मिल जाता है, साथ ही मौसमी सब्जी की खेती से हर 10-15 दिन में जेब में पैसे आते रहते है| वर्तमान समय में किसान उजाला कुमार द्वारा मौसमी सब्जी बंदगोबी, बैगन, टमाटर और मुली की खेती मौसम और बाजार को देखते हुए की जा रही है |

10.1. किये गये कार्य का रंगीन फोटो किसान /समूह के साथ :-

11.सफलता के लिए महत्वपूर्ण तत्व /घटक -

i. कृषि प्रोधोगिकी प्रबन्ध अभिकरण, आत्मा, रोहतास

12. स्थानीय स्तर पर किसानो के बीच सफलता की कहानी का प्रभाव -

उजाला कुमार की खेती की चर्चा आसपास के किसानो में है और इससे देख कर अन्य किसान भी प्रभावित है और कृषक हित समूह से जुड़ कर जैविक खेती को समझने का प्रयास कर रहे है |

13. सफलता की कहानी के लिए प्राप्त पुरस्कार/ प्रशिस्ति पत्र -प्रक्रिया में है |

14 .क्षेत्रवार लागत मूल्य, प्राप्त आमदनी एवं शुद्ध आय का विवरण (रु ० में)-

क्र० स०	विवरण	अपनाने के पूर्व का विवरण		अपनाने के बाद का विवरण	
		प्रक्षेत्र 1		प्रक्षेत्र 2	
1	2	3	4	5	6
1	फसल / क्षेत्र / कार्य का नाम	धान	गेहूं	मौसमी सब्जी 1	मौसमी सब्जी 2
2	कुल भूमि (हे०)	0.75	0.75	0.75	0.75
3	फसल मौसम में फसल/उत्पाद की मात्रा (क्वी में)	45	30	60	60
4	उत्पाद की विक्री दर (रु० में प्रति क्वी)	1800	1925	2400	2000
5	फसल मौसम में/ पौधे की कुल लागत मूल्य	6000	4000	15000	15000
6	उत्पादन का मूल्य (कीटनाशी/ सिचाई / एवं घुलनशील खाद)	5000	3500	7500	7000
7	मजदूरी खर्च (रु० में)	3500	3500	8000	8000
8	अन्य लागत खर्च (रु० में) घर का बचत दाबा	2500	2500	3000	2500
9	कुल लागत खर्च (रु० में)	17000	13500	33500	32500
10	शुद्ध मुनाफा	64000	44250	110500	87500

प्रमाणित किया जाता है की उपयुक्त विवरण मेरी जानकारी में सही है | भविष्य में कोई भी सुचना गलत पाये जाने पर मुझे सरकारी अनुदान / लाभ से वंचित किया जा सकता है तथा इसके लिए मै पूर्ण रूप से जिम्मेवार रहूगा |

उजाला कुमार

किसान का हस्ताक्षर

प्रतिहस्ताक्षर

प्रखंड तकनीकी प्रबंधक/

सहायक तकनीकी प्रबंधक

डिहरी, रोहतास

परियोजना निदेशक

आत्मा , रोहतास

कृषि / कृषि के संबदध क्षेत्रो में सफलता की कहानी

कहानी का विषय - बहु-मंजिला फसल प्रणाली एक प्रयोगात्मक पहल

1. किसान का नाम- बिरेन्द्र कुमार सिंह
2. पिता / पति का नाम -राजेंद्र प्रसाद सिंह
3. पूरा पता -
    - ग्राम/ मुहल्ला- खुदरॉव
    - पंचायत - मझियाव
    - पोस्ट- दरिहट
    - थाना- दरिहट
    - प्रखंड- डिहरी
    - जिला- रोहतास
4. किसान का दूरभाष/ मोबाइल स० - 7070123793
5. किसान के पास खेती योग्य भूमि (हे ० में) - 6 हे ०
6. सिंचित क्षेत्र (हे ० में)- 6 हे ०
7. असिंचित क्षेत्र (हे ० में)- 0 हे ०
8. किसान का प्रकार-
    - सूरज कृषक हित एवं स्वयं सहायता समूह के सदस्य
    - समूह/संगठन का नाम -सूरज कृषक स्वयं सहायता समूह , अयारकोठा
    - निबंधन करने वाली संस्था का नाम- कृषि प्रोधोगिकी प्रबन्ध अभिकरण, आत्मा, रोहतास |
    - निबंधन संख्या एवं तिथि- 8601/ 22.08.2019
9. सफलता की कहानी के पूर्व का संक्षिप्त विवरण :-

डिहरी प्रखंड के खुदरॉव ग्राम में जन्मे किसान बिरेन्द्र कुमार सिंह ने 1996 में रांची यूनिवर्सिटी से गणित में स्नातक किया था | आगे की पढाई हेतु M.Sc में नामंकन करवाया मगर पारिवारिक कारणों से बीच में ही पढाई छोडनी पड़ गयी और अपने पिता के साथ खेती में लग गए| नयी सोच रखते हुए 2005 में D.C.A. (Diploma in Computer Application) का ट्रेनिंग लिया ताकि नयी तकनीक के साथ कदम से कदम मिलाते हुए आगे बढ़ सके| किसान बिरेन्द्र कुमार सिंह अपने पिता और छोटे भाई के साथ संयुक्त परिवार में रहते हुए शुरुआत में परम्परागत तरीके से धान एवं गेहूं की खेती कर रहे थे मगर नई सोच के श्री सिंह अपनी समझ और सूझ-वुझ से खेती में नए प्रयोग करते रहते है | साथ ही साथ सूरज कृषक हित समूह एवं स्वयं सहायता समूह के सदस्य के रूप में आत्मा, रोहतास से जुड़ कर कृषि सम्बंधित राज्य के अन्दर एवं बाहर परिभ्रमण और प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके है |

10. सफलता की कहानी :

किसान बिरेन्द्र कुमार सिंह ने 2018 में कृषि विज्ञान केन्द, बिक्रमगंज (रोहतास) से औषधिय एवं सुगंधित पौधे के उत्पादन का प्रशिक्षण प्राप्त किया हैं| इसी वर्ष सोशल वेलफेयर सोसाइटी से फर्स्ट - ऐड वेटरनरी ट्रेनिंग प्रोग्राम फर्स्ट डिवीज़न से पास किया हैं ताकि घर और आसपास के पशु का प्राथमिक उपचार के साथ जरुरी सलह किसानों को सके | वर्तमान समय में 6 हे० में खेती का काम इनके देख-रेख में किया जा रहा है | कुछ बर्ष पूर्व में किसान मेला में इन्होने बहु-मंजिला फसल प्रणाली के बारे में सुना था, जिसमे अलग अलग ऊचाई (लंबा, मध्यम और छोटा) के दो या उससे ज्यादा पोधे को एक ही खेत में एक साथ, क्षैतिज रूप से (सभी रोपण स्थानों पर कब्जा) और भूमिगत (गहरे जड़ वाले और उथले जड़ वाले पौधों) के रूप में उगाये जाते है, साथ ही इस फसल प्रणाली में प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग किया जाता है और मिट्टी की उर्वरता की स्थिति बनी रहती है। खेती के इस प्रणाली से किसान बिरेन्द्र कुमार सिंह बहुत प्रभावित हुए और घर के पास ही 76 डिसमिल के प्लाट में 200 सागवान, 40 आम, 60 अमरूद, 10 लीची एवं 5 जामुन के पौधे को प्रयोगात्मक रूप से बहु-मंजिला फसल प्रणाली के अनुरूप लगाए हुए है | श्री सिंह ने बनारस के नर्सरियों से इन पौधो को अलग अलग बर्षो में 150 से 500 रु० प्रति पौधे (औसत 300 रु० प्रति पौधा) के दर से खरीदा है, इसके अनुसार पौधा लगाने के एक माह पूर्व में 45 cm लंबा × 45 cm चौडा × 45 cm गहरा गढ़ा किया जाता है, ताकि धुप के कारण कीड़े और उसके अंडे नष्ट हो जाये| निक्ली मिट्टी में VERMICOMPOST, DAP, कुछ मात्रा में UREA और कीटनाशक मिला कर गढ़ा को ¾ भाग को भर दिया गया फिर नर्सरी से लाये पौधे को इसमें लगा कर बचे मिट्टी के मिश्रण को पौधे के चारों ओर अच्छे से डाल दिया गया, ताकि पौधे की पकड़ मजबुत हो और पानी का जमाव जड़ें के पास नही हो सके |

श्री सिंह ने प्रथम एवं दुसरे पंक्ति में सागवाम के पौधे को लगाया है, क्यों की इसकी ऊचाई ज्यादा होगी, तीसरी पंक्ति में अमरूद : आम (60:40 के अनुपात में) लगाये हुए है, चौथी पंक्ति अभी पूरी नही है उसमे 10लीची एवं 5जामुन लगे हुए है बाकि में केला लगाने की इसकी योजना है | श्री सिंह के अनुसार प्रति यूनिट क्षेत्र में आय, इस बहु-मंजिला फसल प्रणाली के साथ काफी बढ़ जाती है और यह प्रणाली पूरे वर्ष कृषि उत्पादों की निरंतर आपूर्ति को सक्षम बनाती है। रोजगार पैदा करता है और बेहतर श्रम उपयोग पैटर्न प्रदान करता है। भूमि उपयोग को अधिकतम करने में मदद करता है। उच्च तीव्रता की वर्षा, मिट्टी के कटाव और भूस्खलन जैसे खतरों के प्रभावों को कम करता है। मिट्टी की विभिन्न गहराई पर मिट्टी की नमी का कुशलता से उपयोग करता है और विभिन्न ऊंचाइयों पर सौर ऊर्जा को पकड़ता है। जैव विविधता के कारण कीट और रोग के दबाव को कम करता है। सागवाम, आम, अमरूद लम्बे समय तक कोई आमदनी नही देगे और लगातार इनके देख-रेख में खर्च होता रहता है जो की समान्य किसाने के लिए मुश्किल है इसके लिए बीच के खाली खेत में मौसमी सब्जी लगाने की योजना पर काम की जा रही है, ताकि कुछ आमदनी आती रहे और देख-रेख का खर्च निकलता रहे |

10.1. किये गये कार्य का रंगीन फोटो किसान /समूह के साथ :-

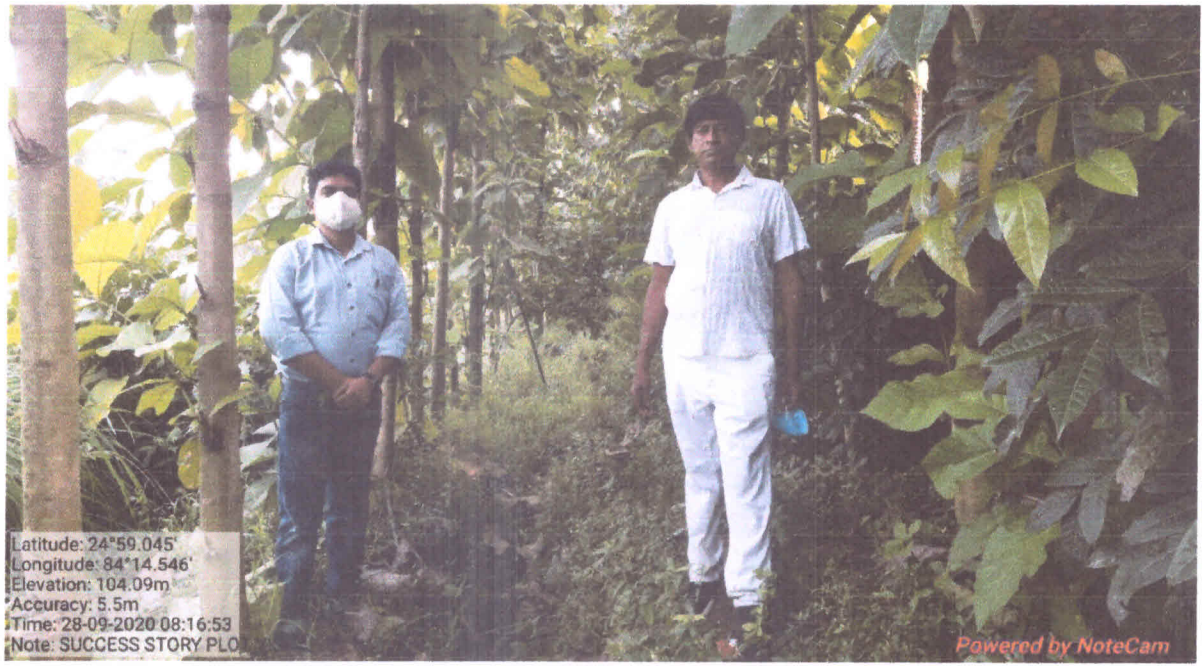

11.सफलता के लिए महत्वपूर्ण तत्व /घटक -

i. कृषि प्रोधोगिकी प्रबन्ध अभिकरण, आत्मा, रोहतास

ii. कृषि विज्ञान केन्द, बिक्रमगंज (रोहतास)

iii. बनारस के नर्सरियों

iv. सूरज कृषक हित एवं स्वयं सहायता समूह

12. स्थानीय स्तर पर किसानो के बीच सफलता की कहानी का प्रभाव -

किसान बिरेन्द्र कुमार सिंह के बहु-मंजिला फसल प्रणाली प्रयोग की चर्चा आसपास के किसानो में है और इससे देख कर अन्य किसान भी प्रभावित है|

13. सफलता की कहानी के लिए प्राप्त पुरस्कार/ प्रशिस्ति पत्र -प्रक्रिया में है |

14 .क्षेत्रवार लागत मूल्य, प्राप्त आमदनी एवं शुद्ध आय का विवरण (रु ० में)-

क्र ० स ०	विवरण	अपनाने के पूर्व का विवरण		अपनाने के बाद का विवरण	
		प्रक्षेत्र 1		प्रक्षेत्र 2	
1	2	3	4	5	6
1	फसल / क्षेत्र / कार्य का नाम	धान	गेहूं	सागवान	अमरूद+आम
2	कुल भूमि (एकड़)	0.76	0.76	0.76	0.76
3	फसल मौसम में फसल/उत्पाद की मात्रा (क्वी में)	18	12	200	100
4	उत्पाद की विक्री दर (सागवान 3"-6" इंच 2000 में, अमरूद+आम 550 रु० के फल प्रति पौधे चौथे साल से)	1800	1925	2000	550
5	फसल मौसम में/ पौधे की कुल लागत मूल्य	3600	3000	60000	30000
6	उत्पादन का मूल्य (कीटनाशी/ सिचाई / कटाई/ जुताई-बुआई /दौनी एवं अन्य)	1500	1200	15000	7500
7	मजदूरी खर्च (रु० में)	3000	3000	20000	10000
8	अन्य लागत खर्च (रु० में) घर का बचत दाबा	1600	1600	4000	2000
9	कुल लागत खर्च (रु० में)	9700	8800	99000	49500
10	शुद्ध मुनाफा	22700	14300	301000	5500

प्रमाणित किया जाता है की उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी में सही है | भविष्य में कोई भी सुचना गलत पाये जाने पर मुझे सरकारी अनुदान / लाभ से वंचित किया जा सकता है तथा इसके लिए मै पूर्ण रूप से जिम्मेवार रहूँगा |

वीरेन्द्र कुमार सिंह

किसान का हस्ताक्षर

R Kumar 08/01/2021

प्रतिहस्ताक्षर

Soni Kumari 05/10/2021

प्रखंड तकनीकी प्रबंधक/
सहायक तकनीकी प्रबंधक
डिहरी, रोहतास

परियोजना निदेशक
आत्मा , रोहतास

कृषि / कृषि के संबदध क्षेत्रो में सफलता की कहानी

कहानी का विषय - पलवार और टपक सिंचाई प्रणाली से खेती

1. किसान का नाम- शशिकांत सिंह
2. पिता / पति का नाम -स्व० राम सकल सिंह
3. पूरा पता -
    - ग्राम/ मुहल्ला- महादेवा
    - पंचायत - जमुहार
    - पोस्ट- जमुहार
    - थाना- डिहरी
    - प्रखंड- डिहरी
    - जिला- रोहतास
4. किसान का दूरभाष/ मोबाइल स० - 7295856019
5. किसान के पास खेती योग्य भूमि (हे० में) - 1.25 हे०
6. सिंचित क्षेत्र (हे ० में)- 1.25 हे०
7. असिंचित क्षेत्र (हे ० में)- 0 हे०
8. किसान का प्रकार-
    - प्रखंड किसान सलाहकार समिति सदस्य
9. सफलता की कहानी के पूर्व का संक्षिप्त विवरण :-

    प्रतिभा से धनवान किसान शशिकांत सिंह, पिता स्व० राम सकल सिंह का जन्म डिहरी प्रखंड के महादेवा ग्राम में हुआ और 1996 में मगध यूनिवर्सिटी से बिज्ञान में स्नातक किया | शशिकांत सिंह ने 1999 में अपनी दंपत्य जीवन की शुरुवात की | पिता जी के निधन के उपरांत किसान शशिकांत सिंह अपनी पढाई छोड़ घर की ज़िमेदारी उठाते हुए, परिवार के परम्परागत खेती को 2010 अपनाया|

10. सफलता की कहानी :

    किसान शशिकांत सिंह ने 2012 में केन्द्रीय मात्सियकी शिक्षा संस्थान से मीठा पानी जल कृषि विषय में सफलतापूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त किया| उसके बाद 2018 में बिहार कृषि प्रबंधन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (बामेती) से लेयर फार्मिंग का प्रशिक्षण प्राप्त किया | वर्तमान समय में 1.25 हे० में खेती का काम इनके देख-रेख में किया जा रहा है | पलवार और टपक सिचाई प्रणाली से प्रभावित होकर इस प्रणाली को 1 बिगहा के खरबूजा की खेती में अपनाया | शुरुआत में तकनीक समझने में थोडी परेशानी का सामना करना पड़ा, पर अलग -अलग लोगो से प्रणाली को भलीभांति समझा जिसमे विभाग के कृषक कर्मी और किसान विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिको के सलाह के उपरांत इस प्रणाली को समझते हुए अपनाया| सामान्य खेती में खाद का प्रयोग परंपरागत ढंग से भूमि पे होते आ रहा है, उसके उल्टा इस प्रणाली में खाद का प्रोयोग सिचाई टंकी में घोल बना

कर पाइप द्वारा टपक बिधि से होता है, जिसके तहत पौधे के जड़ो के एकदम पास पानी एवं पोषक तत्वों की उपलब्धता सुनिश्चित होती है और पोषक तत्वों की लीचिंग में कमी के साथ मिट्टी की नमी को संरक्षित करते हुए मिट्टी के तापमान को संशोधित करके फसल की वृद्धि और प्रतिस्पर्धा बढ़ाता है। साथ ही साथ खाद की लागत मूल्य को कम करता है और पौधे के विकास को सुनिश्चित करता है | टपक बिधि के साथ-साथ अगर पलवार का प्रोयोग हो तो टपक बिधि को चार चाँद लग जाती है | पलवार जो की खरपतवार के रोकथाम का एक सुलभ उपाय है एवं खरपतवार के बीज का अंकुरण कम करता है जिससे रसायनीक दवाओं का उपयोग कम हो जाता है, जो की अनाज एवं फलो की गुणवत्ता को बढ़ा देता है और इंसान को होने वाली बीमारी के खतरे को कम करता है, जो की इस परिवेस में बहुत ही ज्यादा फायेदेमंद है |

10.1. किये गये कार्य का रंगीन फोटो किसान /समूह के साथ :-

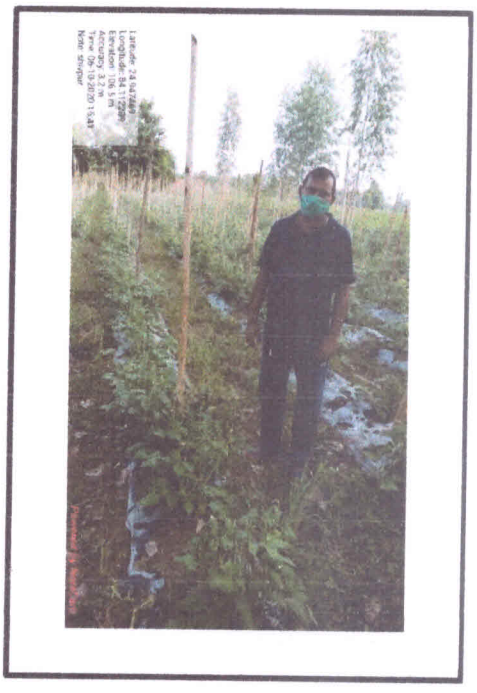

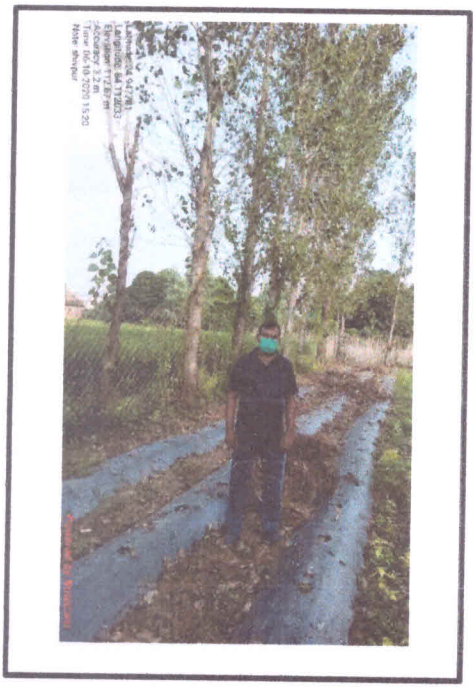

11.सफलता के लिए महत्वपूर्ण तत्व /घटक -

i. कृषि प्रोधोगिकी प्रबन्ध अभिकरण, आत्मा, रोहतास

ii. कृषि विज्ञान केन्द, बिक्रमगंज (रोहतास)

iii. कृषि विभाग

12. स्थानीय स्तर पर किसानो के बीच सफलता की कहानी का प्रभाव -

किसान शशिकांत सिंह के पलवार और टपक सिचाई प्रणाली की चर्चा आसपास के किसानो में है और इससे देख कर अन्य किसान भी प्रभावित है|

13. सफलता की कहानी के लिए प्राप्त पुरस्कार/ प्रशिस्ति पत्र - प्रक्रिया में है |

14 .क्षेत्रवार लागत मूल्य, प्राप्त आमदनी एवं शुद्ध आय का विवरण (रु ० में)-

क्र० स०	विवरण	अपनाने के पूर्व का विवरण		अपनाने के बाद का विवरण	
		प्रक्षेत्र 1		प्रक्षेत्र 2	
1	2	3	4	5	6
1	फसल / क्षेत्र / कार्य का नाम	धान	गेहूं	बोडा	खरबूजा
2	कुल भूमि (एकड़)	0.625	0.625	0.625	0.625
3	फसल मौसम में फसल/उत्पाद की मात्रा (क्वी में)	15	9	10	45
4	उत्पाद की विक्री दर (रु० में प्रति क्वी)	1800	1925	3500	2800
5	फसल मौसम में/ पौधे की कुल लागत मूल्य	3000	2500	12000	18000
6	उत्पादन का मूल्य (कीटनाशी/ सिचाई / एवं घुलनशील खाद)	1500	1500	4000	4000
7	मजदूरी खर्च (रु० में)	2000	1000	6000	6000
8	अन्य लागत खर्च (रु० में) घर का बचत दाबा	1000	1000	2500	2500
9	कुल लागत खर्च (रु० में)	7500	6000	24500	30500
10	शुद्ध मुनाफा	19500	11325	10500	95500

प्रमाणित किया जाता है की उपयुक्त विवरण मेरी जानकारी में सही है | भविष्य में कोई भी सुचना गलत पाये जाने पर मुझे सरकारी अनुदान / लाभ से वंचित किया जा सकता है तथा इसके लिए मै पूर्ण रूप से जिम्मेवार रहूगा |

किसान का हस्ताक्षर

P Kumar 08/11/2021

प्रतिहस्ताक्षर
प्रखंड तकनीकी प्रबंधक/
सहायक तकनीकी प्रबंधक
डिहरी, रोहतास

परियोजना निदेशक
आत्मा , रोहतास